पेशे लफ़्ज़

क़तरा–क़तरा स्याही मेरी पहली हिन्दी पेशकश है। इसको लिखने के पीछे सबसे बड़ा मक़सद ये था कि मैं अपनी ***अम्मा*** कें लिखे हुए कुछ अशार आप लोगो के सामने लाना चाहती थी।

क़तरा–क़तरा स्याही के पहले हिस्से में मेरी वो शायरी है जो मैने अपने कॉलेज के दिनो में लिखी थी। दूसरे हिस्से में अम्मा के लिखे हुए अशार है।

मुझमें लिखने का जज्बा कहॉ से आया ये आप सब मेरी अम्मा लिखाई पढ़ के समझ जाएंगें। सच में वो ही मेरी सबसे बड़ी ईन्सपीरेशन रही है ता–उमर, मेरी सबसे अच्छी दोस्त और हमदर्द भी।

इस किताब में मैने अपने कुछ स्कैच भी डाले है। मेंरी पाँच साल की बेटी, ***आयत,*** को मेरी स्कैचिग बहुत पसन्द है और ये उसी की ख़्वाहिश थी कि मै अपनी किताब में अपने स्कैच भी पेश करु।

किताब की जुबान मिली–जुली है। उर्दू, हिन्दी और इग्लिश, ताकि यह सबको आसानी से समझ आ जाए।

मुझें पूरी उम्मीद है कि क़तरा–क़तरा स्याही आप सबको पसन्द आएगी।
मुझे लिखकर बताइएगा जरूर।

आपकी मुन्तजिर,

शीरीं

“ क़तरा क़तरा स्याही

जज़्बात अलफ़ाजो में समाई

बून्द बून्द लफ़्ज़

अहसासे दिल सब्ज़ ”

फ़हरिश्त / सूची/ CONTENTS

- खुमारे ईश्क (शींरीं)
- सफ़रनामा (शींरीं)
- मज़हबे इन्सानियत (शींरीं)
- क़तरा क़तरा स्याही (शींरीं)
- अम्मा (शींरीं)
- पहले प्यार की याद (शींरीं)
- चाहत के लम्हे (शींरीं)
- सालगिरह (शींरीं)
- ना रहे वो मेरे (शींरीं)
- ख़त (शींरीं)
- हाय रब्बा तेरी दुहाई (शींरीं)
- यार या प्यार (शींरीं)
- शीरी फरहाद (शींरीं)
- एक नामुमकिन ख्वाहिश (शींरीं)
- काश तुम होते (शींरीं)
- सोचो (शींरीं)
- जीवन का सार (शींरीं)
- आप हमारे नहीं (शींरीं)
- आरजू (शींरीं)

- जज़्बाते दिल (शींरीं)
- मेरा माशूकए मेरी जान (शींरीं)
- प्रेम कहानी (शींरीं)
- क़तरा क़तरा नूर (नूर)
- लगी दिल की (नूर)
- ऑखें (नूर)
- ओ मेरे हमसफर (नूर)
- तेरे बैग़ैर (नूर)
- केक (नूर)
- यादें माज़ी (नूर)
- ख़त आपका आया (नूर)
- कॉलेज का टूर (नूर)
- आपा (नूर)
- हाज़िर ये दिल है (नूर)
- हैं आप मुझे पसन्द (नूर)
- इम्तिहान (नूर)
- डीसेपशन (नूर)

खुमारे ईश्क

जिस वक़्त खुदा ने तुम्हें बनाया होगा,
इक सुरूर सा उसके दिल पे छाया होगा
पहले सोचा होगा तुझे जन्नत में रख लूँ,
फिर उसे मेरा ख्याल आया होगा

आज की रात भारी है मुझपे,
कल तुमसे मुलाकात जो है
नींद मेरी आखों से रूख़सत है,
तुम्हारे ईश्क का ख़ुमार जो है

झुमके, चूड़ी, कँगना, पायल,
क्या माँगू तुमसे ?
मेरी खुशी तो सिर्फ तुम हो,
कहो तो माँग लूँ तुम्ही को, तुम से

दे सकोगी क्या मुझे मेरा प्यार ?
क्या कर सकोगी ख़त्म ये इन्तज़ार ?

मेरी पलकों में जो तुम्हारी सूरत बसी है,
ऊफ!!! ये ख़ुमारे ईश्क कितना हसीं है

पूछिए तो ज़रा मुझे और क्या चाहिए
बस प्यार में तुम्हारा इक़रार चाहिए
ज़िन्दगी में तुम सा दिलदार चाहिए,
उर्म भर का ईश्के ख़ुमार चाहिए ।

सफ़रनामा

उस आठ घण्टे के सफर में मैं कैसे खुद को बहलाती,

अपनी परेशानी मैं भला किसे समझाती

दिल को बहलाने के लायक कोई चेहरा न था,
मानो दुनिया मे मुझसा कोई अकेला न था

उसका हसीन चेहरा देखकर जैसे दिल की कली खिल गई,
मुझे मानों मेरी खोयी हुई मंज़िल मिल गई

शर्म के मारे पलकें मेरी झुक गई,
अपने जज़्बात छिपाने को मैं किताब में छिप गई

उसकी नज़रे जैसे ही मेरी और पड़ी
हम दोनों की निगाहें आपस में लड़ी

सफर अब लगने लगा था सुहाना,
क्योंकि मुझे मिल गया था एक दिलचस्प बहाना

मुझे मालूम था वह दिल्ली से वाराणसी जा रहा है,
इसलिए मैनें दीदी से पूछा वाराणसी कब आ रहा है ?

आइने में देखकर मैन खुद को सवाँरा,
अपनी चूड़ियों की छन–छन से उसे पुकारा,

चूड़ियों की बोली हम दोनों समझते रहे,
पूरे वक्त बस एक दूसरे को तकते रहे,

वों एक टक देख रहा था मुझे,
मेरे दिल मे भी कई नये जज्बात थे उमड़ रहे

आँखो की बोली से हम एक दूसरे को बुलाते रहे,
नज़रो के इशारों में खुदाई को भुलाते रहे,

मैनें उसे सोने न दिया लखनऊ आने तक,
वो भी एक ही करवट लेटा रहा मेरे जाने तक,

कौन है ये न जाने दिल सोचता रहा कब तक,
उसका मन भी यही सोच चुका होगा, हज़ार बार अब तक,

उसकी निगाहों के आगे मेरा दिल था शर्म से हारा
लेकिन मुझे बड्डा अफसोस हुआ जब उसने जेब से सिगरेट निकाला

अपना गुस्सा मुझे सिर्फ खास कर था दिखाना ,
मकसद था उसके हाथ से सिगरेट फिकवाना

दीदी से मैने कहा यह सिगरेट पीने वाले नहीं होते भले,
यह सुनकर वो रह गया दिल को मले,

इस हसीन सफर में मेरा दिल था खो गया,
लेकिन यह सफर जल्द ही पूरा हो गया

एक बजे जब लखनऊ पहुँचने का वक्त आ गया,
सिवाए उसके सारा कम्पार्टमेन्ट था सो गया

अपना सारा सामान मैने खुद ही नीचे उतारा,
पर उसने मद्द को भी ना पुकारा

मैनें आखिर पूछ ही लिया
क्या नाम है तुम्हारा,

वह कुछ बोल पाता उससे पहले मैनें कहा,
सिगरेट बन सकता है आपका हत्यारा

SMOKING MAKES YOU DIE...

OK BYE BYE

यह कह कर मैं ट्रेन से नीचे उतर आई

मज़हबे इन्सानियत

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना,

इसका मक़सद है बस सच्चाई परखना

मज़हब है इन्सानियत की ख़िदमत,

अपने उसूलों पर शान से चलने की रख हिम्मत

नेकी की राह पर कभी न मानना हार,

अपने किरदार को न बनाना गुनहगार,

भाई को भाई से मिलवाना,

सबको सबका जायज़ हक़ दिलवाना

बुज़ुरगों की हमेशा ख़िदमत करना,

सिवा ख़ुदा के किसी से न डरना

कहे शीरीं

मज़हब नहीं ख़ुदाई से जुदा

मज़हबे इन्सानियत पर कर सब फिदा

क़तरा क़तरा
स्याही

क़तरा क़तरा स्याही

क़तरा क़तरा लफ्ज़
क़तरा क़तरा जज़्बात
क़तरा क़तरा स्याही
क़तरा क़तरा अलफाज़

क़तरा क़तरा अरजू
दिले नादॉ की जुस्तजू
क़तरा क़तरा नूर
मसरुरे मोहब्बत का सुरुर

क़तरा क़तरा सॉसे
बीते लम्हो की यादें
क़तरा क़तरा जिन्दगी
ख्वाहिशे अरश की दीवानगी

क़तरा क़तरा मोहब्बत
लम्बी जुदाई मुख्तसर कुर्बत
क़तरा क़तरा स्याही
ख्यालो का ला –महदूद समन्दर

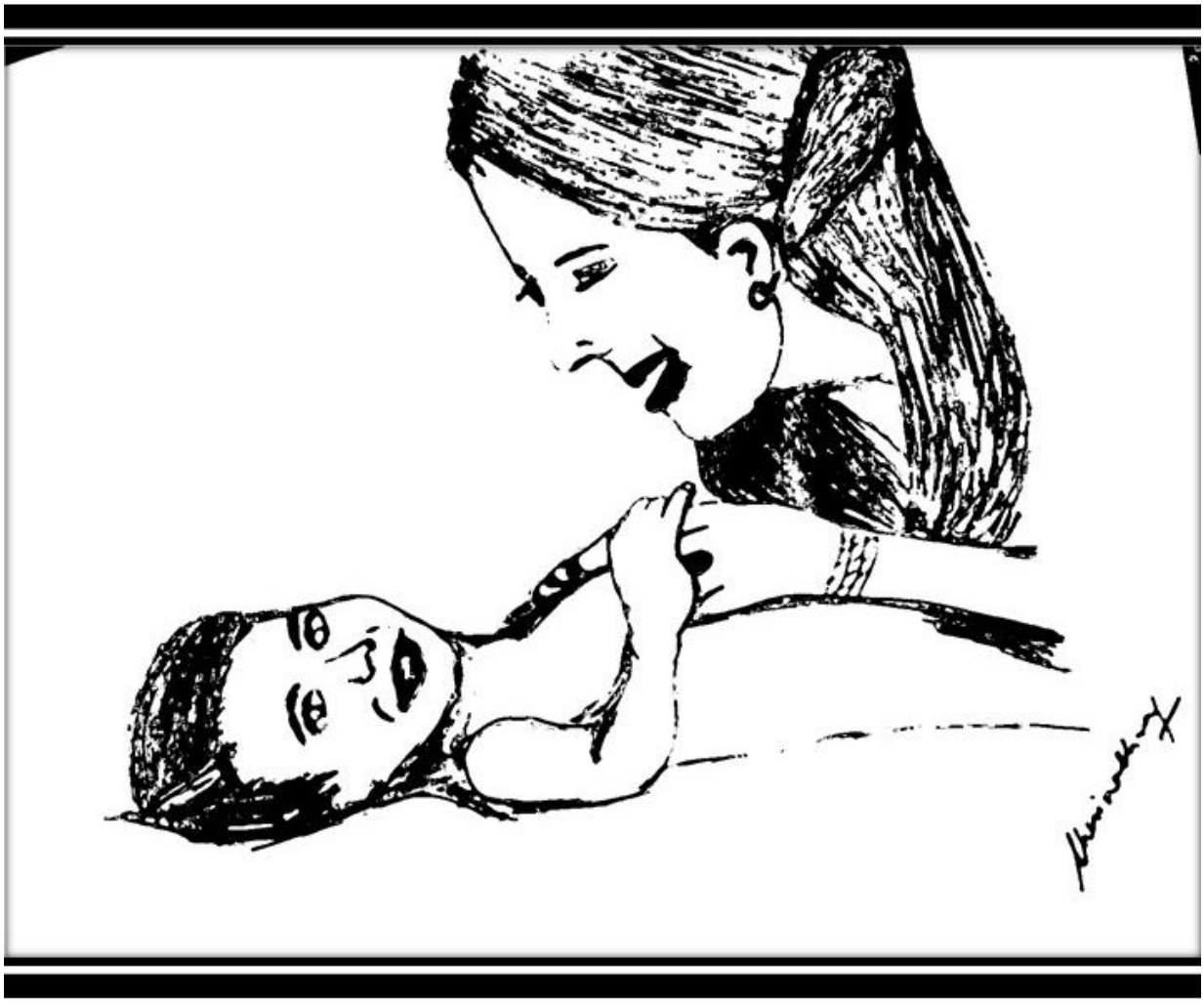

अम्मा

क्या बताऊँ आप क्या हैं मेरे लिए,
आपके साथ मैंने प्यार के लम्हें जिए।

अगर आप न होती तो मैं न होती,
फिर बताओ मैं किसकी गोद में सोती ?

मेरे आंसुओं को सदा आपने पोछा है
और मैने हमेशा आपको अपने करीब देखा है

आप ममता की मूरत है,
जो मेरे दिल में बसती हैं
आप खुदा की रहमत हैं

जो हमेशा कहती हैं, कि
''छोटी चन्दा ज़िन्दगी में कभी आस न खोना,
सबको प्यार देना और प्यार पाना''

आपने ही मुझे जीना सिखाया,
सदा प्यार से अपना हाथ थमाया
कहे शीरीं
माँ का प्यार होता है सबसे सच्चा,
आप से भला और कौन है अच्छा

वो अपने हाथों से खाना खिलाना, वो प्यार की झोली में मुझे सुलाना,
मम्मी, अम्मी, अम्मा, माँ आप के कितने ही नाम,
मेरा दिल करता है बडी इज़्जत से आप को सलाम।

पहले प्यार की याद

एक रोशनी सी

दिल की गहराईयों में बसी हुई

ऐसी धुँधली जैसे पानी की सिहाई

किरनों से बना एक चेहरा,
वैसा ही जैसा ख़्वाब था मेरा
निगाहों में अजीब सी कशिश
लम्हों को रोकने वाली बन्दिश

भला कैसे भुलाएं वो हसीन बातें
ज़िन्दगी भर याद रहेगीं वो मुलाक़ाते

जिनमें हम तुम पर फिदा हुए
बार–बार मिले और जुदा हुए

कितने हसीन थे वो दिन,
जब हम न रह पाते थे तुम्हारे बिन
तुम कहो न कहो हम कहते हैं,
तुम मानो न मानो हम मानते हैं
तुम जानो न जानो हम जानते हैं
दिल के जज़्बात पहचानतें हैं

वो दिलकश तबस्सुम, गुलाबी होठों की शबनम
आज भी है तड़पा जाती
पहले प्यार की याद है जब आती
पहले प्यार की याद है जब आती

चाहत के लम्हे

ख़्यालों के समुन्दर में,

मोहब्बत की लहरे

प्यार की ज़ुबान
दिल की धड़कन

तुम्हारा नाम जैसे चाहत का फरमान
लम्हों के कानों में घुलती हुई
शीरी अज़ान

निगाहों की कशिश,
खूबसूरत बन्दिश
जिसमो से उठती हुई किरने
जैसे चाँदनी,
रात में कायनात पे बिखरी हुई

जब हम तुम साथ थे –
वो शाम कितनी हसीन थी
आज दिल उन लम्हों को याद करके सिर्फ रोता है

हाय!
यह अब भी तुमसे उतनी ही मोहब्बत करता है।

सालगिराह

खुशिया ज़िन्दगी में आती हैं कम,

आज के दिन न कोई रोना न गम।

दिल से बजाओ बाजा और पीटो ड्रम,

क्योंकि आज हमारी सालगिरह है

डम डमा डम डम

चले हम सालगिरह मनाने सजधज कर

दुनिया ज़माने का हमे न कोई डर

वादे के मुताबिक़ सबको वहाँ ही पाया

ट्रीट के लिए जहाँ था हमने बुलाया

सलगिरह की शुरूआत करता है बर्थडे केक,

चॉकलेट और चैरी का बेहतरीन मेक,

जो करवाया गया था एक ख़ास बेकरी से बेक

हैपी बर्थडे सबने संग गाया,

फूँकवा के केण्डिल हमसे केक कटवाया

बर्थडे गिफट पाकर खिल गया हमारा चेहरा

फिर चला खूबसूरत कार्डस का फेरा

लफजों ने हमे गहरे ज़ज्बातों में घेरा

बस यही चाहता था दिल मेरा

दोस्तो ने कहा –दुआएँ करते कि आए सालगिरह बार–बार तुम्हारी,

और यह खूबसूरत दोस्ती बनी रहे हमारी

दिल से न चाहते हुए भी अलविदा कहना है,

इन्शाल्लाह इस दिन पर अगले साल फिर मिलना है

कहे शीरीं

हसना गाना दोस्ती यारी

बस इसमें छुपी है ज़िन्दगी सारी

ना रहे वो मेरे

मौसम के रंगों की तरह

हमने देखा है लोगों को बदलते हुऐ

जो कभी क़रीब थे इस दिल के

अब ना रहे वो मेरे

ज़ज्बाते दिल है, मुश्किल में

क्यो हमारे रिश्ते को रूसवा कर डाला

मुँह मोड़ा साथ छोड़ा

पल भर की कुरबत बनी लम्बी जुदाई

मौसम के रंगों की तरह

हमने देखा है लोगों को बदलते हुऐ

जो कभी क़रीब थे इस दिल के

अब ना रहे वो मेरे

दिल की आवाज़, धड़कन का साज़, ज़ज्बातो की लहरे

वो दोस्ती , साथ रहने की कसमें

बन गई एक गहरी खाई

वो हमर्दद मेरा क्यो बदला

तोड़ दिया छोड़ दिया क्यो साथ मेरा

हाँ ये सच है

टूटे दिल, फिर कभी नहीं जुडते

सच्चे माशूक़ क़िस्मत से है मिलते

बेवफाई और रूसवाई की परछाई

अब है मुक्कदर में मेरे

मौसम के रंगों की तरह

हमने देखा है लोगों को बदलते हुऐ

जो कभी क़रीब थे इस दिल के; अब ना रहे वो मेरे

ख़त

ये ख़त नहीं मेरे अरमान हैं

ये लफ़्ज़ नहीं मेरी ज़ुबान हैं

दिल की धड़कन,

मेरी जान हैं

मेरे प्यार का पैग़ाम हैं

मनज़र इस दिल का

हसीन, रंगीन, दिलकश, जवान हैं

क्यो कि आज मौसम भी कुछ बेईमान हैं

आप की हर खुशी पे हम कुरबान हैं

आप ही हमारी ज़िन्दगी,

हमारी पहचान हैं

इस दिल को धड़का दिया

आप का हम पे अहसान हैं

आप के प्यार को पाकर हम हैरान हैं

कहे शीरीं कि चलो आज बता ही देती हूँ की

आप ही मेरे लिए सारा जहान हैं

हाय रब्बा तेरी दुहाई

आँसू के घूँट पीती तन्हाई

सज़ा सी लगे ये लम्बी जुदाई,

उस पर से दर्दे रूसवाई,
हाय रब्बा तेरी दुहाई,

जुदाई में एक एक पल सदी सा लगता है,
हर दिन महीनों के जैसे बीतता है
जुदाई किसी को न दे ये खुदाई,
हाय रब्बा तेरी दुहाई

जुदाई से मासूम दिल टूटता है
आखिर जग ऐसा जुल्म क्यों करता है,
जुदाई के बुरे दिन किसी को न दें दिखाई,
हाय रब्बा तेरी दुहाई

कहे शीरीं
खत्म कर दे तू ये जुदाई
अब न दे मुझे बेरहम तनहाई
कर ले मेरी सुनवाई
हाय रब्बा तेरी दुहाई

यार या प्यार

ये है इस दुनिया का सबसे मुश्किल सवाल,

तेरे लिए कौन ज्यादा वफ़ादार

यार या प्यार ?

किसकी है सच्ची वफ़ा

तेरा दोस्त या हमनवा ?

सदियों से चलती रही है ये तकरार,

तेरे लिए कौन ज्यादा वफादार

यार या प्यार ?

अटूट दोस्ती की है कई मिसालें मौजूद,

कैसे एक इंसान से जुड़ा है दूसरे का वजूद

एक पर कैसे दूजा कुर्बान

मर मिटना है दोस्ती की शान

मोहब्बत के भी है बहुत से अफसाने मशहूर

कैसे चाहत में हो जाता है आशिक मजबूर

चाहत में जान लुटाना नहीं कोई मुश्किल काम,

ऐसे कितने ही प्रेमियों का है इतिहास में नाम

अब वापस उठता है वही सवाल,

तेरे लिए कौन ज्यादा वफादार

यार या प्यार?

हर रिश्ते का दुनिया में है अपना मुकाम कहे शीरीं

चाहे यार हो या प्यार ; दोनो ही होते है बड़े वफादार

रिश्तो को तराजू मे ना तौल बार–बार

कर यार को प्यार और बना प्यार को यार

यही है जीवन का सार

शीरीं फरहाद

मोहब्बत की एक दिलकश दास्तां

दो तड़पते दिलों के मासूम अरमाँ,

सब आशिकों को है ये कहानी जबानी याद,
कैसे शीरीं के इश्क में
लुटा था फरहाद

मर के भी जिन्दा है ये दोनों,
आओ अब ये कहानी मेरे लफजो में सुनों

शहजादी शीरी थी हुस्न की एक मिसाल
उसकी नजरों के तीर करते थे कमाल,
जिन्हे देखकर नौजवानों का दिल होता बेहाल

फरहाद भी अपने जैसा एक ही था,
सूरत से भोला और दिल से नेक भी था
हां फरहाद का था एक अलग ही अन्दाज

सब आशिकों को है ये कहानी जबानी याद,
कैसे शीरी के इश्क में
लुटा था फरहाद

जब हुस्नो–इश्क का हुआ सामना,
प्यार के जज्बातों को नामुमकिन था थामना
आखिर उन दोनों को भी पड़ा मानना

कि जज्बातो को लग गये है परवाज

सब आशिकों को है ये कहानी जबानी याद,

कैसे शीरी के इश्क में

लुटा था फरहाद

पर खुदाई ने मोहब्बत को कब है माना

उसने आशिकों को हमेशा गुनहगार ठाना,

ये जुल्मों सितम जाने कब बन्द करेगा ये जमाना

शीरी का कर निकाह किया रवाना

जुदाई में फरहाद हुआ दीवाना,

पर जमाने की दीवारें कब है प्यार को रोक पाई

शीरी की वफा फरहाद को महल तक खीच लाई

हा इश्क की हो गई थी फिर बुलन्द आवाज

सब आशिकों को है ये कहानी जबानी याद,

कैसे शीरी के इश्क में

लुटा था फरहाद

फरहाद अपनी चाहत पाने को कुछ भी करने को था तैय्यार,

पर्वत को काट कर निकाली पानी की धार,

पानी पहाड़ो से निकाला उसने
लेकिन उनके प्यार को फिर भी न माना जमाना,

फरहाद को मरवा दिया
शीरी को तबाहो, बरबाद किया

सब आशिकों को है ये कहानी जबानी याद,
कैसे शीरीं के इश्क में
लुटा था फरहाद

लेकिन सच्चा प्यार कहाँ मरता है
वो तो हमेशा जिन्दा रहता है,
शीरी फरहाद की ये हसीन दास्तां आज भी है आबाद

सब आशिकों को है ये कहानी जबानी याद,
कैसे शीरीं के इश्क में
लुटा था फरहाद

एक नामुमकिन ख्वाहिश

किसी को पाने की, ज़िन्दगी बसाने की,

आशियाना बनाने की, सुहाग सजाने की,

एक नामुमकिन ख़्वाहिश

दिल धड़काने की, प्यार निभाने की,

इश्क मनवाने की, सनम को लुभाने की,

एक नामुमकिन ख़्वाहिश

रूठने मनाने की, हसने गाने की,

चाँद लाने की, कुछ कर दिखाने की,

एक नामुमकिन ख़्वाहिश

काश तुम होते

वो मोहब्बत के पल याद आते हैं,
रातों को करवटें बदलते हुए,
सिसकियाँ भरते हुए,
ख़ाली दीवारे तकते हुए

वो मोहब्बत के पल याद आते हैं,
जब लब बेक़रार हो उठते हैं,
जब निगाहें बस एक ही चेहरा ढूंढती है
जब दिल की सूनी गलियों में एक ही आवाज़ गूँजती है,
वो मोहब्बत के पल याद आते हैं,
जब दिल कह उठता है कि 'काश तुम होते'.

काश तुम होते
महफ़िलो के चेहरों में – उजालो मे अन्धेरो में
मेरी रातों में – सवेरो में
काश तुम होते
बस काश तुम होते

सोचो

सोचो ऐसा क्यों होता है,

कि हम एक दूसरे को जान कर भी समझ नहीं पाते

कि हम एक दूसरे का दिल है दुखाते

कि हम जो महसूस करते हैं वो क्यो नहीं कह पाते

कि दूर होकर भी हम एक दूसरे को हैं याद आते

सोचो ऐसा क्यों होता है,

कि हम रूठें तो एक दूसरे को क्यो नहीं मनाते

कि हम जान के दिल की बात हैं छुपाते

कि हम हमेशा एक दूसरे को हैं रुलाते

कि हम इस रिशते को क्यो नहीं समझ पाते

सोचो ऐसा क्यों होता है

सोचो

जीवन का सार

खट्टी मीठी बातें ही तो हैं ज़िन्दगी का सार,
खुशी और ग़म में हम न माने हार
हर दम मुश्किलों से लड़ने को हो तैयार,
राह के पत्थरो को ठुकराए बार–बार
दिलो से जोड़ दिलों के तार,
करों अपने सपनों को मेहनत से साकार
हिम्मत के बल पर अपनी ज़िन्दगी को लो सिवार,
रखो सादा जीवन और उच्च विचार
कहे शीरीं यह सीख कभी ना हो बेकार,
समझो तो हो नईया पार

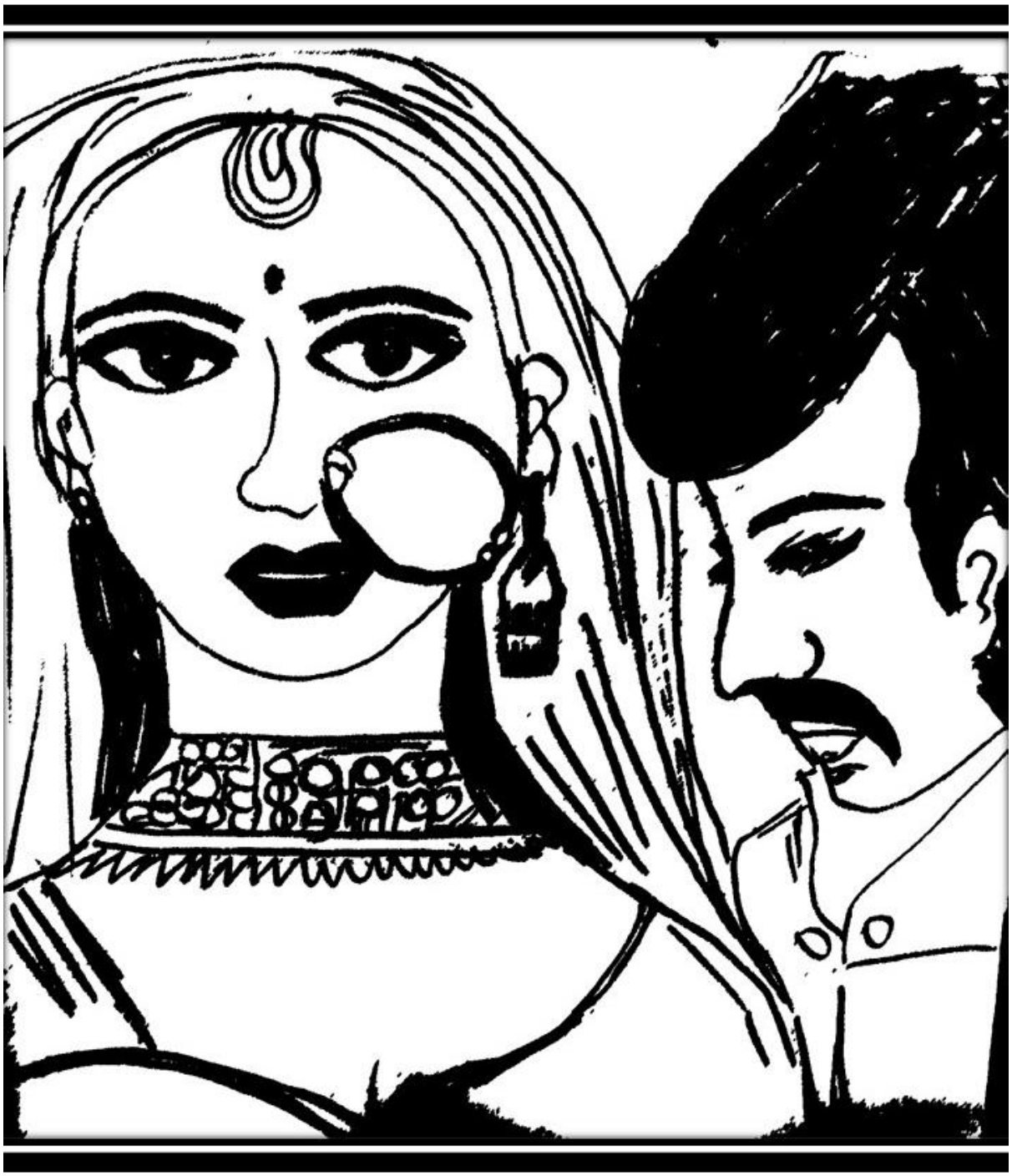

आप हमारे नहीं

कोई बात नहीं अगर आप हमारे नहीं
हम तो सिर्फ आपके हैं

प्यार किया तो जरूरी नहीं
कि बदले में प्यार मिल ही जाए
हमें आपका साथ मिला
ख़ुदा का शुक्र है
कितनो को जिन्दगी में इतना भी नसीब नहीं

प्यार कोई शर्त नहीं
प्यार तो है सूनी धड़कनों की गूँज
बुझी आँखों की उम्मीद
जो हर सदमा भुला दे

हमें आपका साथ मिला
अल्लाह की रहमत
बाकी जो हुआ
वो हमारी किस्मत

आरजू

दफनाना मेरी लाश को जरा सभाल के,

कहीं कफन मे लिपटी हुई कोई आरजू न हो

आरजू की बात क्यों दिल दुखाती है,

हमने भी कभी की थी एक आरजू

जो आज भी याद आती है

जिन्दगी आरजुओं का समन्दर है,

मोहब्बत तो बस कतराए मुकद्दर है

क्यों दिल करता है आरजू बता हमें

जीने की कोई और राह दिखा हमें

जो तुम न समझे इस दिल की बात,

तो कोई गम नहीं,

जाने क्यों अब तुम, तुम नहीं

और हम, हम नहीं

जज़्बाते दिल

कौन किससे मोहब्बत करता है ये तो खुदा ही बेहतर जाने,
हम तो बस अपने जज़्बात समझते हैं
दिल की लय पे लिखा है एक गीत हमने
रोज़ बस उसकी ही धुन सुनते हैं
इस दिल में कुछ तमन्नाएँ हैं
जिनके पूरी होने की तमन्ना करते हैं
एक अद्भूरे ख्वाब सा है ये प्यार,
यही सोचकर अपने जज़्बातों से लड़ते है
कल बिछड़ना है ये जान के हम
जुदा होने के ख़्याल से डरते हैं
जब आप नज़रों से दूर चले जाते है,
हम दर दर मारे फिरते हैं
तुम्हारी मोहब्बत के ख़्वाब देखते हुए
उनके सच होने की आरजू करते हैं
आपके बिना ज़िन्दगी क्या होगी,
हम तो आप ही को देखकर जीते हैं
शायद कभी ये कह न सके हम,
कि ऐ सनम हम आप ही पर मरते हैं

मेरा माशूक, मेरी जान

जिसके हसने से बेरंग फूलों में पड़ जाती है जान,

जिसके आने से खिल उठता है सारा गुलिस्तान

जिसपर मेरा दिल होता है बार–बार कुरबान,

वो है मेरा माशूक मेरी जान.....!

मेरी ख्वाहिशों की पहचान

मेरे दिल का अरमान,

एक सच्चा ओर नेक इंसान

वो है मेरा माशूक मेरी जान.....!

न कोई मगरूरी न कोई गुमान

जिसकी चाशनी जुंबान,

जिसका नूर देखकर मै भी हूँ हैरान,

वो है मेरा माशूक मेरी जान.....!

प्रेम कहानी

ये है एक प्रेम कहानी ,

जो हमने सुनी है लोंगो की जुबानी

प्यार क्या होता है ये बतलाती है,

इश्क की एक अजीब दास्तान सुनाती है

कहानी है एक हसीन और जवाँ जोडे की,
अलहड़ उम्र में उनका दिल धड़का,
और चाहत का शोला भड़का
दिन ब दिन उनका होश खोता गया
और प्यार गहरा होता गया

पर वो लडकी जिस इन्सान को दिलों जान से चाहती थी,
उस दिलफेक आशिक की हकीकत कहाँ जानती थी ?
महाशय के पास हसीनाओं की क्या कमी थी ?
उनकी आँखे एक पर कब थमीं थी ?
प्यार तो उनके लिए रोज का काम था,
बे लगाम आशिक उनका दूसरा नाम था

ये मोहब्बत जो उस लडकी की जिन्दगी का हसीन सपना था,
इन जनाब की दिल की किताब में बस एक और पन्ना था

जल्द ही लडके ने ईस मासूम मोहब्बत को छोड दिय
और उस बदनसीब लड़की का दिल तोड दिया
उसकी वफा का क्या खूब सिला मिला
सासो से भी उसे जुदा किया
कहे शीरीं दिल की राहे अक्सर पेंचीदा होती है
सच्चा दिलदार जब मिले
प्रेम कहानी बस तभी पूरी होती है

क़तरा क़तरा नूर

ऑखों से अशको ने निकल कर,

लूट लिये इशरत को धुन धुलके,

थक कर क्यों बैठा है मुसाफिर,

देख निशाने मंजिल चलके,

उनकी हॅसी है दर्द की ज़ीनत,

मेरे आंसू शेर ग़जल के,

राहे वफ़ा दुशवार बहुत है,

देख छूरी की धार पे चलके

□□□□□□□

सोते रही खुदा की खुदाई तमाम रात,

बेमारे गम को नींद ना आई तमाम रात,

आता रहा तू याद हर लम्हा हर घडी,

दिल से ना तेरी याद भुलाई तमाम रात,

आजा के इंतजार की ताकत नही मुझमे,

कब तक संहू मै दर्द ए जुदाई तमाम रात

उनसे उल्फत को ज़माना हो गया,

जो हकीकत थी फसाना हो गया,

नज़रे उनकी थी कूपिड के तीर,

दिल मेरा जिनका निशाना हो गया,

सुनके मेरा हाल वो कहने लगे

अब तो ये किस्सा पुराना हो गया,

काश उनको भी मेरा कुछ ध्यान हो,

दिल मेरा जिनका दिवाना हो गया

□□□□□□□

मेरे दिलबर मेरे दिलदार तुम हो,

नहीं तुमसा हसीन कोई जहॉ में,

जहाने हुस्न के सरकार तुम हो,

अदाओं में बला की दिलकशी है

परी चेंहरा परी रुख़सार तुम हो,

दिलों जान नज़र है दोनों तुम्हारें,

जो चाहों वो करो मुख़तर तुम हो

लगी दिल की

कैसी मेरी किस्मत मेरे मालिक ने बनाई,
हर रोज़ का रोना, खुशी एक रोज़ ना पाए,
है कौन जो समझे दिले नाशाद की हालत,
सुनता भी नहीं कोई दुहाई है दुहाई

तुम भूल गये गर कोई शिकवा नहीं मुझको
सच पूछों, तो की है मेरे साथ भलाई,
अब ख़त ना लिखूगी तुम्हें सोचा था ये मैनें,
पर क्या करु दिल ने जो मेरे बात ना मानी

ओ भूलने वाले क्यों याद तेरी आये,
क्यों याद तेरी आये, दिल को मेरे तड़पाए,
मैं भूलूगी तुझे क्योंकर इतना बता दे,
हर वक़्त ख़यालों में जब तू मेरे छा जाये,
है याद मुझे अब तक वो प्यार भरी बातें,
है लुफ्त अजीब उनका जब दिल उनको दोहराये,

दिल से तेरी उल्फत भुलाई नहीं जाती,
उल्फत की जिन्दगी यूं मिटाई नहीं जाती,
हम जानते है तुमको हमारा नही ख़याल,

पर हमसे लगी दिल की बुझाई नहीं जाती,
तुम बिन क़रार पायेगा क्यों कर दिले हाज़ी
हर रोज़ ये दुनिया तो बसाई नही जाती

अजब जिन्दगी है अजब बेबसी है,
अजब रनजो ग़म है अजब बेकली है,
है बेकार अपना वजूद इस जहॉ मे'
ना सूरत भली है ना सीरत भली है,

है ये जिन्दगी एक तस्वीरे हसरत
ना पहली सी शोख़ी ना जिन्दा दिली है,

मेरे दिल मे कोई तम्मना नहीं है,
मेरे दिल में उल्फत का ज़ज्बा नहीं है,
है छोड़ा उन्हें अपनी खुशी से मैंने
उनसे कोई भी शिकवा नही है

उन्हें मैं ना भुलाउगीं जिन्दगीं में
मुझे गर वो भूले तो परवाह नहीं है,
बस अब याद तेरी मेरी जिन्दगीं है
अंधेरे में दिल के यही रोशनी है,
मुसीबत नई मुझपे आके पड़ी है,
मुक्कदर का शिकवा हम अपने करें क्यो,

नहीं एक सी यहॉ किस की कटी है,

मोहब्बत मे तेरी जहॉ को भुलाया,
तेरा नाम लब पर मेरे हर घड़ी है,
किधर जाये
किसको पुकारे
करें क्या,
नहीं मिलता अपना जहॉ मे कोई है

कभी मुझको तेरी मोहब्बत मिली थी,
मै समझी थी दुनिया की दौलत मिली थी,
बड़े प्यार से तुमनें देखा था मुझको,
अजब दिल को मेरे मस्सरत मिली थी,

ज़माने से छुप कर मुझे तुमने चाहा
मगर इस मोहब्बत को शोहरत मिली थी,
नहीं चैन था तुमको मुझ बिन घड़ी भर,
कि हम दोनो की खूब तबियत मिली थी,
ज़माने ने तुमको लिया छीन मुझसे,
बहुत कम दिनो के रफाक़त मिली थी,
तुम्हें काश हम प्यार जी भर के करते ,
ना होने के पूरी ये हसरत मिली थी

ऑखें

आज क्यों सोग़वार है ऑखें,

किस लिये अश्क बार है ऑखें,

उनके सायें से बद गुमानी है,

कितनी बे इतबार है ऑखें,
चोट खाते ही अश्क भर आये,
दिल की आईनादार है ऑखें,

ख़िरमाने दिल को ख़ाक कर डाला,
गोया बारको शारार है ऑखें,
बातों बातों मे दिल को मोह लिया,
कितनी ना करदा कार है ऑखें,
दिल का खलवत कद़ा तेरा मसकद,
और तेरी रह गुज़ार है ऑखें,

वायदा अपना ना हो सका ना सही,
किस लिये शर्म सार है ऑखें,
मुझको नाहक ना दीजिए इलजाम,
इश्क की जिम्मेदार है ऑखें
रंग मे डूबी हुई उनकी गुलाबी ऑखे,
मैय जवानी की पिये ,
मस्त शराबी ऑखें,
उन हसीन ऑखों के वो है इशारे पैहम,
कैसे भुलाऊ वो सवाली वो जवाबी ऑखें

ओ मेरे हमसफर

मुझे छोड़ के तू चला है किधर,

हर तरफ है अंधेरा मैं जाऊँ जिधर,

इस अंधेरे मे आता नहीं कुछ नज़र,

ओ मेरे हमसफर

थाम ले हाथ मेरा चलेंगें साथ हम,

बिछड़े कभी फिर रहें साथ हम,

की हो साथ ही साथ जीवन सफर,

ओ मेरे हमसफर

कसम है तुझे मेरे लौट कर आजा अब,

लौट आ न यू मुझको रुला,

ख़ता क्या हुई मुझसे ये तो बता,

जरा कर मेरे हाल पर तू नज़र,

ओ मेरे हमसफर

POCO
SHOT ON POCO F1

तेरे बैग़ैर

विरान हो गयी मेरे दुनिया तेरे बैग़ैर,

बे–कैफ हो गया हर इक जज़्बा तेरे बैग़ैर,

क़दमों से जाने क्यों तेरे तूने जुदा किया,

क्यों कॉटे ये हयात तन्हा तेरे बैग़ैर,

किन मंजिलों पे लाके मुझे तूने छोड़ा है,

आता नहीं नज़र कोई रास्ता तेरे बैग़ैर

क्यों कर तेरे फिराक़ मे गुज़रेगी ज़िन्दगी

जाती है जान अब हर इक लम्हा तेरे बैग़ैर,

आजा कि अब किसी तरह आता नहीं क़रार,

है मुत ज़िले क़रार के दूनिया तेरे बैग़ैर,

गर हो यक़ीन की लौट के अब तू ना आयेगा,

आसान नहीं ग़मे फरदात तेरे बैग़ैर

केक

भाई साहब अर्ज़ ये है

आप जो लाये थे केक,

था निहायत खूबसूरत, था बहुत डीसेन्ट नेक

था निहायत नर्मो नाज़ुक, था निहायत ही लज़ीज,
आज तक तारीफ उसकी कर रहा है यहॉ हर एक,
ज़ायक़ा उसका ज़ुबान से दूर होता ही नहीं,

किस क़दर खुश ज़ायका था
किस क़दर अच्छा था केक,
एक तो हम सब ने खाया खूब लेले के मज़ें,
और दिया कालेज में जाकर लड़कियो को मैने केक
ख़ाके सबने शौख से मुछसे कहा सुनती हो नूर,
भाई साहब भी तुम्हारे नूर, ये सबने कहा एसे ही,
बेमिसाल होंगें जैसे था बेमिसाल केक,

भाई साहब आप के इख़लाक़ की तारीफ हो सकती नही,
आप है खालके मुज़सम आप है हद दर्जा
आप जैसे अच्छा भाई मुझको है जबसे मिला,
मै समझती हूॅ उसे अपने लिये इक अमाल नेक,

सीधे साधे से मेरे अशार है,
आप पढ़ कर मुझ पर हॅसीएगा नहीं
फौर गौड सेक

यादें माज़ी

तन्हाई में पड़े पडे उलझन थी दिल को रात,

और था दिमाग वक्फ हुजुमे तख़े जुलात,

ना नींद का पता था ना दिल को करार था,

बिदार मै थी नींद मे थी सारी कायनात

बेचैनी बढ गयी दिले हसरत नसीब की,

याद आ गये जो भूले से बचपन के वाक़ियात,

दिल एक सूरोरो कैफ की दुनिया मे खो गया

पूर लुफत इस कदर थे मज़ी के वाक़ियात

हर वाकियें की याद ने मसूर कर दिया,

इस महवियत में कट गयी ऑखों मे सारी रात

दिल आलमय ख्याल मे लेती रही मज़े,

सब दिल से दूर हो गये ग़म के तासुरात

क्या खुश गवार दौर वो दौरे हायात था,

हसना था खेल कूद था, सुबह से शाम तक,

यह शग़ल जब हम समझते थे मसकदे हायात

ना फिर्क थी कोई ना गमे रोज़गार था,

हम खुश थे की खुश नज़र आते थी कयनात,

हर दिन रची जाती थी गुड़ियो की शादियॉ,

हर दिन निकाली जाती थी एक नित नई बारात

हम जोलियो से खेल में हो जाती थी झङप,

कर बैठतें थे गुस्से मे तरके तलुाक़त,

फिर जल्द ही होके रिश्ते उल्फत मे मुनसलिक,

हम जल्द भूल जाते थे सब गुज़रे वाक़ियात

सुबह हुई कि उठते ही जुट गये खेल में,

और खेल खत्म तब हुए जब आयी सर पे रात,

पढने जो बैठे कुछ पढा और उठ खड़ें हूए,

फेका कहीं क़लम कहीं बसता कहीं दवात

नाकशो नीगार सैकड़ो बनते चले गये,

हर रोज़ उल्टी जाती थी कपड़ो पे जो दावत,

अब दिल को लाख फिर्क है सधा तररादुात,

एक हम है और घेरे है हर सू तराफुकरात

वो ज़िन्दगी के जिस में वाजुज़ गम खुशी न हो,

बेकार ज़िन्दगी है वो बेकार वो हायत,

आये अहदे रफता लौट के अब तु कब आयेगा,

कब होंगें मेरी ज़ीस्त मे खूशकुन ताग़ैयुरात

दिल चाहता है फिर वही आज़ाद ज़िन्दगी,

दिल चाहता है फिर वही आज़ाद जिन्दगी

कब तुझसे पूरे होंगे वो दिल के मुतलबात

हम जानते है लौटके अब तू ना आयेगा,

बेकार बांधे बैठे है तुझसे तव्वाकुरात,

माना के तूने हमको फरामोश कर दिया,

पर हम ना तुझे भुलायेगें जब तक है ये हयात

हा तेरे जल्द जाने का अफसोस है जरुर,

है किसको यहॉ सबात जो होता तूझे सबात,

जो आया इस जहॉ में जायेगा वो जरुर,

जो ज़ाते ह़क किसी को यहॉ है नहीं सबात,

तेरे तरह कायम है यहॉ सबका चन्द रोज,

एक करवा सिरा है ये दुनिये बे सबात

औ नूर अहदे रफता को अब याद क्या करें,

उस इस अहद की तरह से है जब मुख्तसर हयात,

चश्में ज़दन मे जिस तरह वो दिन गुजर गयें,

इक दिन उसी तरह से गुजर जायेंगी हयात

ख़त आपका आया

भाई साहब खत आपका आया,

शुक्रिया मुझको याद फरमाया,

ख़त का मज़मू बहुत पंसद आया,

जब पढ़ा लुफत एक नया पाया

ख़त के लिखने मे आप जय मशाक,

ख़त के रहते है हम सब यहॉ मुशताक़,

डाकिया लेके खत जब आता है,

लेने हर शक्स दौड़ जाता है

घर में होता है एक खुशी का समा,

भूल जाते है हम गमे दौरॉ,

ख़त के आने से होती है जो खुशी,

उसको मै अर्ज़ कर नहीं सकती

होती है घर मे हर तरफ एक धूम,

होता है शाद हर दिले मगमून,

आप जब आते है हमारे घर

लुफत रहता है रात भर दिन भर

घर मे रहता है जश्ने शहाना,

दिल रहता है खुशी से दीवाना

और जब आप है चले जाते,

लुफत फिर ये नज़र नही आते

घर मे सन्नाटा सा है छा जाता,

दिल रह रह के है सबका घबराता

है गर्ज आप इस चमन की बहार,

आप से रहता है यह घर गुलज़ार

आपको हक रखे सदा क़ायम,

ये फ़िज़ा लुतफे जार है दायम,

अब मै लिखती हूँ और बातें चन्द

जिनका सुनना करेंगें आप पसन्द

फज़ल मामू का ख़त था एक आया,

हमको उन्नाओ मे था बुलवाया

ज़िर्कं रहता था आप ही का वहॉ,

वस्फ होते थे आप ही के बयॉ

हर जुबॉ पे थी आप ही की तारीफ,

हर जुबॉ पे थी आप ही की तौसीफ,

कहती थी मुझसे ये मुमानीजान

बाइसे फर्क है बशीर मियॉ,

फज़लू मामू भी कहते थे हॉ हॉ,

है फरिशता सिफत बशीर मियॉ

बाजी बेगम भी करती थी ताईद,

वाकई है मियॉ बशीर सईद

सुनके कहती थी मै बदले शाद,

भाई साहब हमेशा जिन्दाबाद,

सिर्फ दो दिन रहा वहॉ पे क़याम,

तीसरे दिन किया घर आके आराम,

था इरादा यहीं कि मै और हुजूर,

आयेंगें लखनऊ भी जाके जरुर,

पर थी कुछ ख़ास ऐसी मज़बूरी,

कि रही हाज़िरी से माजूरी,

लखनऊ मै जरुर आऊगीं

कब आऊगीं फिर बताउॅगी,

ख़त्म करती हूॅ ख़त फक़त आदाब,

ख़त का दीजिएगा जल्द मेरे जवाब

कॉलेज का टूर

सुबह पढना शाम पढना था ये शग़ले जासीता,

पढते पढते रात दिन हम हो रहे थे नीमजान,

था यहीं दौरे तसालसुल का रोज़े शब,

सुबह को कॉलेज को जाना, शाम को आना मकान,

जिन्दगी बेकैफ सी मालूम होती थी हमें,

चाहता था दिल मिले इस शगल से कुछ दिन अमान,

खुश हुई उस दिन मै बेहद जब ये कॉलेज मे सुना

जायें इस भी टूर यहॉ की लड़कियॉ,

इस सफर का था यह मकसद जाके हम देखें ज़रा

मुल्क मे क्या हो रही है आजकल तबदीलियॉ

इस तरह होगा इज़ाफा इल्म मालूमत में

इस तरह से दूर होगी अक्ल की सब ख़ामियॉ

अल ग़रज करके किताबे ताके निसया के सिपुर्द

हम सफर के वास्ते करने लगे तैयारियॉ,

हर घड़ी हर वक्त रहता था यही दिल को ख्याल,

कब रवाना होता है देखें हमारा कारवॉ,

वो भी दिन आया बिलाखिब जिस की हर दम याद मे बढती जाती थी हमारे,

खलब की बेचैनियॉ

इस कदर हम खुश थे उस दिन इस कदर थे शादमा,

कर नहीं सकते है जिसको चन्द लफ्जों में बया,

अपने अपने घर से लेके अपना सामने सफर,

मुझतमा पहले हुए कॉलेज मे सारी लडकियॉ,

पहुॅचे स्टेशन पे जब हम, था वहॉ दिल कश समा,

आ रही थी जा रही थी हर तरफ गाडियॉ,

हर तरह की नियामतो का हर तरफ अम्बार था,

बिक रहें थे ताज़ा लड्डु और खस्ता पूरियॉ

ताज़ा बर्फी ताज़ा पेडे और खस्ता दाल मोट,

खस्ता पापड सेव ताजा और ताज़ा रोटियॉ,

सेब ताज़ा संतरे अमरुद केले और आनार,

किशमिश बादाम काजू कुल मज़ा खुबानियॉ

साहिबी जरर ख़रिदारी मे वहॉ मसरुफ थे

बेजरीर मानी थे जिनको तक रह थी मुह वहॉ,

शौके दिल कहता था उनसे, तुम भी लो यहॉ कुछ खरीद,

सर्द कर देते थी लेकिन शौक को मजबूरियॉ,

कुछ गरीबों के भी हाल जाल पे करते नज़र,

इन परीस्ताने जरर को इतनी फुरसत थी कहॉ,

हर तरफ एक शोर गुल था हर तरफ थी एक पुकार,

कान बहरे कर रही थी इनजनो के सीटीया,

इतने मे आ पॅहुचा दिल्ली मेल इठलाता हुआ,

दौड़ी भागे सब मुसाफिर सर पे रख के गढ्ठरियॉ,

चूकि एक हमारी बोगी वैसे रिज़र्व थी,

इस लिये जा बैठे इसमे बादिले सब शाद में,

रात भर आराम और चैन से सोते रहें,

सुबह हो जा पहुचे नानगल करना था मंजिल जहा

भाकड़ा नानगल मे हर सू थी मशीने हुकमुरॉ,

अकाले इंसानी की अज़मत जिनसे होती थी बयॉ

काम वो मुशकिल से मुशकिल जिनका करना हो मुहाल ,

हो रहे थे काम वो सब उन मशीने से वहॉ,

भाकड़ा नानगल को चारो सिमत मे घेरे पहाड,

छू रही है आसमान को जिनकी ऊचीं चोटियॉ,

इन मशीनों के बदौलत इन मशीनों के सबब,

आज इंसान अपने जोरे इल्म जोरे अक्ल से,

है ज़मीन पर आसमान पर बहरों पर हुकनुमा,

घेर कर दरियॉ सतलज है बनाया वा पे बान,

अब ना होगा उसका पानी मुफत में यूँ रांयगा,

होके अब सैराब उससे सैकडो इकद ज़मीन,

सोने उगलेगी जमीन, शादाब होंगी खेतियान,

फैज़ के उससे ज़मीन पायी ताज़ा जिन्दगी,

सर जमीने हिन्द के बढ जायेगी जरखेजियान,

फिर वहॉ से आये दिल्लीं सैर करने के लिए,

जग मगाते होटलो में ठहरने हम पहुँचे जहॉ,

जामा मस्जिद, बिरला मन्दिर, और देखा राज घाट,

फूल बापू की समाधी पर चढाये कुछ वहॉ,

शमा के बिलडिंग भी देखी और कुतूब मीनार भी,

और देखा लाल किला याद गारे शाहजहॉ,

थी उदासी और खमोशी हर तरफ छायी हुयी,

लाल किला अहधे राफता पर था अपनी नौहा खॉ,

अब ना वो रौनके थी उसमें और ना वो शाने शौकत,

था बुलन्दी पर सितारा इसके इसो जाह का,

जब फरोकश था इसमे शहनॅशाहें हिन्दुस्तान,

जब यहॉ थी कार फरमा हुस्न की रानाइयां,

जब यहॉ महवे खीरामे नाज़ थी शहज़ादियॉ,

जिनके हुस्ने रोज अफजा़ का था शोहरा चार सू

था रुखे रौशन पे जिनके माही ताबा का गुमा,

जिनकी ऑखों मे था जादू जिनकी बातें दिल फरेब थी

अदायें जिनके दिलकश, जिनके नख़रे जा सिता,

हो रहे थे आज ज़रे ख़ार सब उसके मकीन,

लाल किला अहदे मज़ी पर था अपने नोहा खॉ,

हो रहा था वाफरे रंजो ग़म से पाश पाश,

कसर भी वो हमने देखा और पाई बाग भी,

है फरकोश जिसमे सदरे मोहर्तम हिन्दुस्तान,

दीद के काबिल था मंज़र क़सर वाला शान का,

बाग पे होता था धोखा है ये बागे हिन्ना,

खिल रहें थे फूल हर सू खुशनुमा और दिल फरेब,

झुमते थी वजद के आलम में सर्वे बूसतान,

बुलबुले थी बाग मे फूलों पे हर सू नगमा सिरा,

भीनी भीनी मस्त खुश्बू से महकता था गुलस्ता,

कैफ परवार इक फिज़ा थी हर तरफ छायी हुई,

बाद हम उसके हम मिले फिर सदरे हिन्दस्तान से,

मुखतसर बातें हुई उनके हमारे दरमियॉ,

खूब दिलचसप रही हर दरजा हर घडी,

घूम फिर कर पाचॅवे दिन लौट आये हम मकान,

जब तलक बाहर रहें हम खुश रहें हॅसते रहें,

मह दिल से हो गई थी रंजो अफतारे जहॉ,

हर घडी मसरुर हम थे, हर घडी थे शादमा,

भूले रहते थे बराबर जिन्दगी की तक़लीफियॉ,

अब है किताबों से बातें, अब है फिकरे इम्तेहॉ,

अब वही हम है वहीं कालेज वही मजबूरियॉ

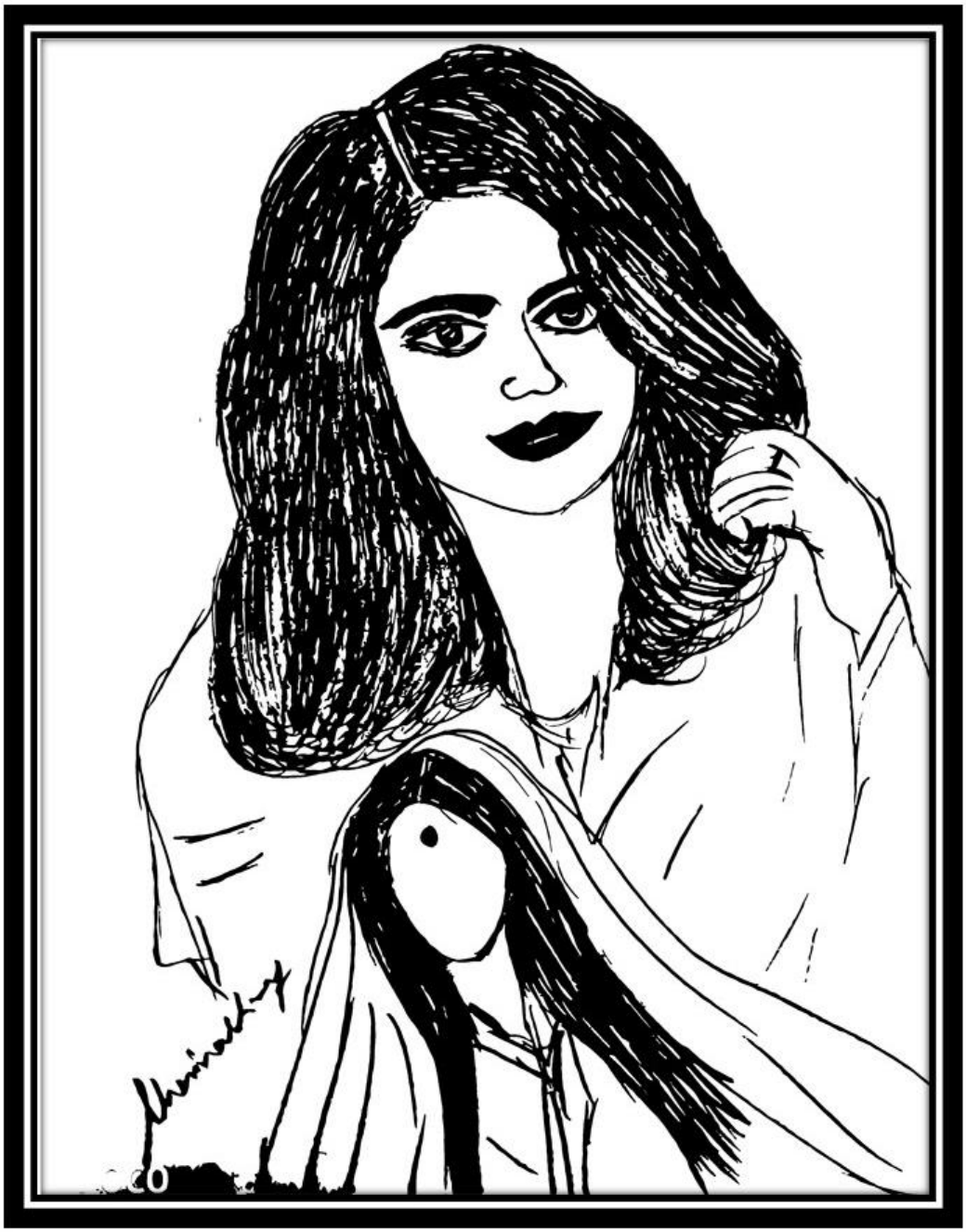

आपा

ख़ुदा ने हमें दी तहरीदार आपा,

बड़ी खूबसूरत समझदार आपा,

मज़ेदार आपा, हायादार आपा,

सजिसता सैर, नेक अतवार आपा,
फरिशता सिफत नेक खुद्र्दार आपा,

खुदा की फरिशता
सलिमस तबा नेक खुद्रदार आपा,
मिली है किसी को ना मिलेगे,
मिली जैसें हमको वफादार आपा,

मुकद्रदर से हमको मिली है वगरना किसे,
मिलती है' एसी गमख़ार आपा

यकी' मानिए जब तलक जिन्दगी है
रहूगीं मे तरी वफ़ादार आपा

जहॉ मे फिर अपना ठिकाना नहीं है,
अगर हमसे हो जाए बेज़ार आपा

खुदा से मेरी रोज़े शब इलतिजां है,
कि या रब दे हमें ऐसी ही दो चार आपा

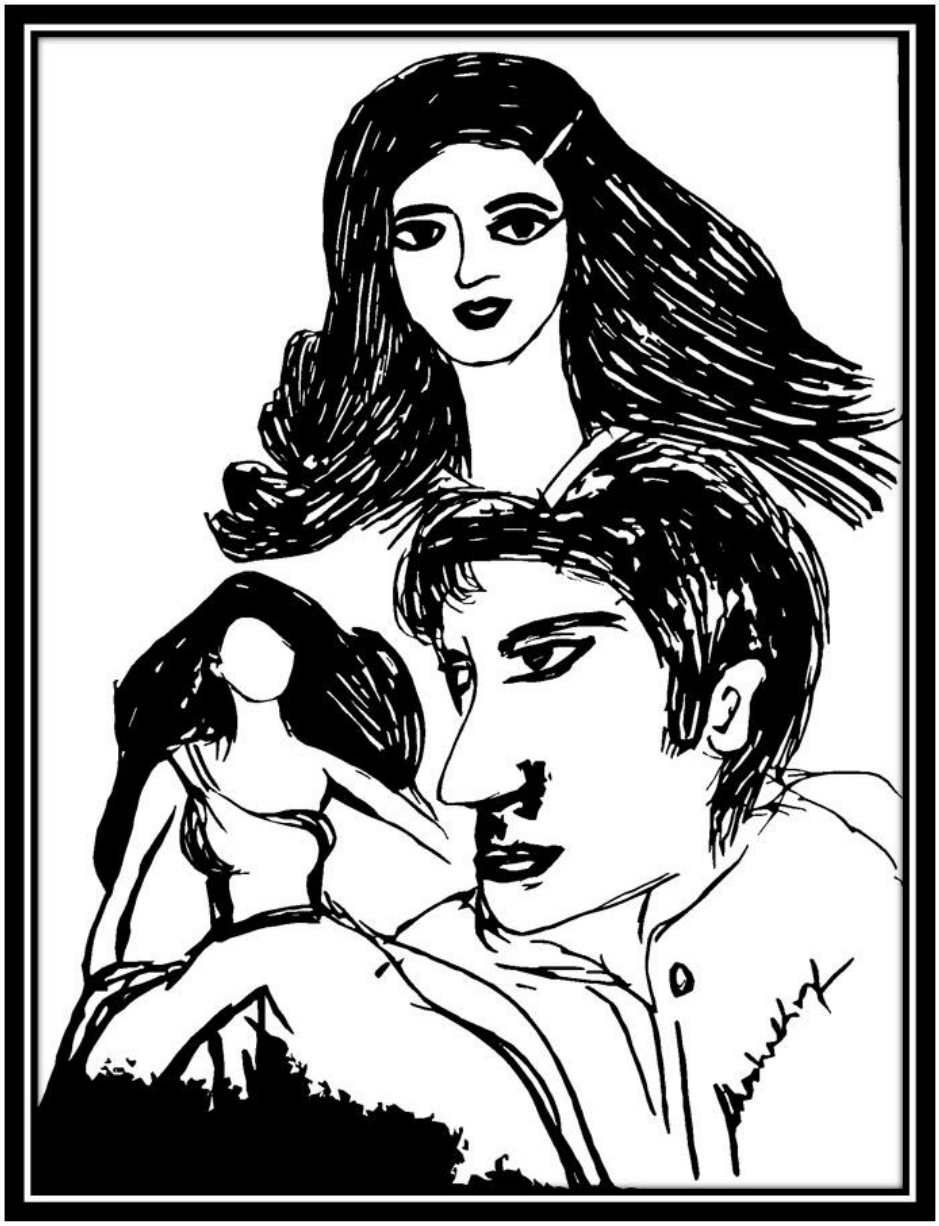

हाज़िर ये दिल है

जो दिल चाहते हो

तो हाज़िर ये दिल है,

मुझे तुमसे ज्यादा प्यारा नहीं है,

हर एक शय से है उसका जलवा नुमाया

गर चै वो ख़ुद आशिकार नहीं है,

जो लेंगे वो लेंगें हम अपने खुदा से

कि औरो का एहसान गवारा नहीं,

हमें तरके उल्फत गवारां नहीं है

कि अब दिल पे काबू हमारा नहीं है,

जो की तरके उल्फत तो उसमें सारा कसूर आपका है

हमारा नहीं,

ना करते मोहब्बत ना बदनाम होते,

कसूर इसमें सच है तुम्हारा नही' है

जो करना है कर लो यह दम है ग़नीमत,

कि इस ज़ीईस्त का कुछ सहारा नहीं है,

हमें जहॉ के अब गम उठाने का यारा नहीं है,

सुनायें किसे नूर ग़म के फसाना

कोई राज़दॉ यहां हमारा नहीं है

हैं आप मुझे पसन्द

ये तो बतलाए मुझे आपसे,

क्यो है ये उलफत कमाल

वजह ये है,

है आप हद दर्जे नेक,

खूबसूरत बहुत खुश ख़्याल,

मुरव्वत मे तहज़ीबो इख़लाक मे

मैं सच कहती हूँ आप है बेमिसाल,

शराफत मे' नेकी में, आदत में,

नहीं रखते है आप अपनी मिसाल,

ये वजह है

हैं आप मुझे पसन्द,

दिल चाहता है मै हर घड़ी देखते रहूँ आप ही का जमाल,

मै हूँ घर पे ये उन किस काम मे,

लगा रहता है आप ही का ख्याल,

मेरा दिल है और आपकी याद है,

भूला दे कभी आपको क्या मजाल,

यहीं करती रहती हूँ दिल से सवाल,

मोहब्बत तो है मगर डर ये है

खुदा जाने क्या होगा इसका मुआल,

कभी होती है दिल से ये गुफतगू

कभी होता है इसका मलाल,

कि जब आप यहॉ से चले जायेंगे तो क्या होगा

फुरक़त मे इस दिल का हाल

ये इलतिजा है आप से नूर की,

कि रखियेगा इसका बराबर ख़्याल,

भुला देंगें इसको अगर दिल से आप,

तो हो जायेंगा इसका जीना मुहाल,

हमारी रहीं बस यही कोशिशे'

ना देखें हमारी मोहब्बत ज़वाल,

जहॉ भी रहें आप वहॉ खुश रहें,

निगहबा ख़ालिक़े जुल जलाल

इम्तिहान

है इस माह मे इम्तिहान की चढाई,

मैं और दिन रात है अब पढाई,

किताबें हर इक वक्त पेशे नज़र हैं,

यही दोस्त मेरी शामो सहर है,

किताबो से हर वक़्त रहती है बातें,

इसी ख़्याल में कटते है दिन और रातें,

हर इक वक्त रहता है मुझको यही ग़म,

कि पढना बहुत है अभी वक़्त है कम,

नहीं होती है इस पर भी दिल को सैरी,

तबियत नहीं भरती पढने से मेरी,

यही रहता है शौके दिल का तक़ाज़ा,

ना कुछ कर तू बस पढे जा पढे जा,

ना खाने से रक़बत ना सोने की फुरसत,

नहीं मिलती है बात करने की मौहलत,

निकलते नहीं इक घड़ी घर से बाहर,

सहेली पलट जाती है घर पे आकर,

क़रीब इम्तिहान जिस क़दर आ रहा है,

उस दर्जा दिल मेरे घबरा रहा हे,

ग़रज़ इम्तिहान भी बुरी इक बला है,

कि जिसके तसवुर से दिल कॉपता है,

दुआ आप सब मिलके कीजिए ख़ुदा से,

कि वो मेरी मेहनत का मुझको सिला दे,

मेरे दिल का मक़सद बराये शताबी,

मिले इम्तिहान में मुझे कामयाबी,

गुज़र जाए दिन इम्तिहान के खुशी से,

तो खेलूगीं कुदूगीं में खुशदिली से, कहा करती है मुझसे अम्मी बराबर

कि बिटिया तुम इतनी मेहनत न किया करों,

किताबें है हर वक़्त दमसाज़ तेरी,

तबियत ना हो जाए नासाज़ तेरी,

यहीं रोज़ रहता है अम्मी का सरमन,

मगर मुझको लाना है अच्छी पोज़ीशन,

करु किस तरह फिर मै पढ़ने मे ग़फलत,

कि मेहनत से मिलती है इन्सान को इज़्ज़त

डीसेपशन

उन्हे मुझसे मिलने में है Hesitation

करुंगी मै इस बात पे Agitation

उन्हे भेजी है वसल की Application

मगर उसका अंजाम होगा Rejection

कहॉ तक कोई जुल्म उनके उठाए

क़ता कर लिया हमने उनसे Connection

अब उनके मजालिम जहॉ पर खुलेंगे

बिठाया हैं आज हमने उनपे Commission

न दोज़क़ कही है, न जन्नत कहीं

ये है एक धोखा, वो है एक Deception

गए उनके घर पे, तो मुॅह से न बोले

हुआ इस तरह वहॉ हमारा Reception

किये लाख वादे मगर वो न आए,

रहे रोज़ देते नया एक Deception

कवि–नामा

शीरीं अशरफ लखनऊ की रहने वाली है जहॉ के मशहूर स्कूल ला मा टीनियर गर्ल्स कॉलेज से इन्होने पढाई की है। आजकल यह Automobile Sector में काम कर रही है। इससे पहले इन्होने Telecom और Consulting में काम किया है। एक दशक से भी ज्यादा तजुरबा रखने वाली शीरीं ने HR, Training, Recruitment, Consulting, Communications, CSR and Consulting के क्षेत्र मे काम किया हैं।

शीरीं को लिखना–पढना, हौलिडे करना और लोकप्रिय गाने सुनना पसन्द है। इनकी पहली किताब Dreadful Desires & More, 2017 में प्रकाशित हुई थी, जिसे काफी सरहाया गया। 2018 में इनकी Soul's Secret Story और 2019 में Touchpoints, Kindle पर प्रकाश्ति हुई। इनकी तीनों किताबें **www.amazon.in** पर उपलब्ध है। क़तरा–क़तरा स्याही इनकी चौथी किताब है।

शीरीं से संपर्क करने के लिए आप contact@sherinashraf.com पर ई–मेल कर सकते है।

Website: www.sherinashraf.com

Facebook Page: sherinashraf.theauthor